# स्वर्गीय गणिवर्य बुद्धिमुनिजी

[ अगरचन्द नाहटा ]

जैन धर्म के अनुसार सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही मोक्षमार्ग है। जो व्यक्ति अपने जीवन में इस रत्नत्रयी की जितने परिमाण से आराधना करता है वह उतना ही मोक्ष के समीप पहुंचता है, मानव जीवन का उद्देश्य या चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना ही है। मनुष्य के सिवा कोई भी अन्य प्राणी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये मनुष्य जीवन को पाकर जो भी व्यक्ति उपरोक्त रत्नत्रयी की आराधना में लग जाता है उसी का जीवन धन्य है, यद्यपि इस पंचम काल में इस क्षेत्र से सीधे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, फिर भी अनन्तकाल के भव-भ्रमण को बहुत ही सीमित किया जा सकता है। यावत् साधना सही और उच्चस्तर की हो तो भवान्तर (दूसरे भव में) भी मोक्ष प्राप्त हो सकता है। चाहिये संयमनिष्ठा और निरंतर सम्यक्साधना। यहां ऐसे ही एक संयमनिष्ठ मुनि महाराज का परिचय दिया जा रहा है जिन्होंने अपने जीवन में रत्नत्रयी की आराधना बहुत ही अच्छे रूप में की है, कई व्यक्ति ज्ञान तो काफी प्राप्त कर लेते हैं पर ज्ञान का फल विरति है उसे प्राप्त नहीं कर पाते और जब तक ज्ञान के अनुसार क्रिया-चारित्र का विकास नहीं किया जाय वहां तक मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता--'ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः। गणिवर्य बुद्धिमुनिजी के जीवन में ज्ञान और चारित्र इन दोनों का अद्भुत सुमेल हो गया था यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आपका जन्म जोधपुर प्रदेशान्तर्गत गंगाणी तीर्थ के समीपवर्ती बिलारे गांव में हुआ था। चौधरी (जाट) वंश में जन्म लेकर भी संयोगवश आपने जैन—दीक्षा ग्रहण की। आपके पिता का स्वर्गवास आपके बचपन में ही हो गया था और आपकी माता ने भी अपना अन्तिम समय जान कर इन्हें एक मठाधीश-महंत को सौंप दिया था, वहां रहते समय सुयोगवश पन्यास श्री केसरमुनिजी का सत्समागम आपको मिला और जैन मुनि की दीक्षा लेने की भावना जाग्रत हुई। पन्यासजी के साथ पैदल चलते हुए लूणी जंक-शन के पास जब आप आये तो सं० १९६३ में ९ वर्ष की छोटी सी आयु में ही आप दीक्षित हो गये आपका जन्म नाम नवल था, अब आपका दीक्षा नाम बुद्धिमुनि रखा गया वास्तव में यह नाम पूर्ण सार्थक हुआ आपने अपनी बुद्धि का विकास करके ज्ञान और चारित्र की अद्भुत आराधना की। थोड़े वर्षों में ही आप अच्छे विद्वान हो गये और अपने गुरुश्री को ज्ञान सेवा में सहयोग देने लगे।

तत्कालीन आचार्य जिनयशःसूरिजी और अपने गुरु केसरमुनिजी के साथ सम्मेतशिखरजी की यात्रा करके आप महावीर निर्वाण-भूमि-पावापुरी में पधारे आचार्यश्री का चतुर्मास वहीं हुआ और ५३ उपवास करके वे वहीं स्वर्गवासी हो गये, तदनन्तर अनेक स्थानों में विचरते हुए आप गुरुश्री के साथ सूरत पधारे, वहां गुरुश्री अस्वस्थ हो गये और बम्बई जाकर चतुर्मास किया उसी चातुर्मास में कार्तिक शुक्ला ६ को पूज्य केसरमुनिजी का स्वर्गवास हो गया। करीब २० वर्ष तक आपने गुरुश्री की सेवा में रहकर ज्ञानवृद्धि और संयम और तप—जो मुनि-जीवन के दो विशिष्ट गुण हैं—में आपने अपना जीवन लगा दिया आभ्यंतर तप के ६ भेदों में वैयावृत्य सेवा में आपकी बड़ी रुचि थी, आपके गुरुश्री के भ्राता पूर्णमुनिजी के शरीर में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक भयंकर फोड़ा हो गया उससे मवाद निकलता था और उसमें कीड़े पड़ गये थे दुर्गन्ध के कारण कोई आदमी पास भी बैठ नहीं पाता था, पर आपने ६ महीनों तक अपने हाथों से उसे धोने मल्हमपट्टी करने आदि का काम सहर्ष किया। इससे पूर्णमुनिजी को बहुत शाता पहुँची, वे स्वस्थ हो गये।

आगमों का अध्ययन करने के लिए आपने सम्पूर्ण आगमों का योगोद्वहन किया। इसके बाद सं० १९९५ में सिद्धक्षेत्र पालीताना में आचार्य श्रीजिनरत्नसूरिजी ने आपको गणिपद से विभूषित किया।

मारवाड़, गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र और पूर्व प्रदेश तक में आप निरंतर विचरते रहे। कच्छ और मारवाड़ में तो आपने कई मन्दिरमूर्त्तियों एवं पादुकाओं की प्रतिष्ठा भी करवायी। श्रीजिनरत्नसूरिजी की आज्ञा से भुज में दादा-जिनदत्तसूरिजी की मूर्त्ति एवं अन्य पादुकाओं की प्रतिष्ठा बड़ी धूमधाम से करवाई। वहाँ से मारवाड़ के चूड़ा ग्राम में आकर जिनप्रतिमा, नूतन दादावाड़ी और जिनदत्तसूरिजी की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा करवाई। चूडा चातुर्मास के समय ही आपको जिनरत्नसूरिजी के स्वर्गवास का समाचार मिला आचार्यश्री की अन्तिम आज्ञानुसार आपने जिनऋद्धिसूरिजी के शिष्य गुलाबमुनिजी की सेवा के लिए बम्बई की ओर विहार किया और उनको अंतिम समय तक अपने साथ रख कर उनकी खूब सेवा की, उनके साथ गिरनार, पालीताना आदि तीर्थों की यात्रा की। इसी बीच उपाध्याय लब्धि-मुनिजी का दर्शन एवं सेवा करने के लिये आप कच्छ पधारे और वहाँ मंजलग्राम में नये मन्दिर और दादावाड़ी की प्रतिष्ठा उपाध्यायजी के सान्निध्य में करवाई, इसी तरह अंजार (कच्छ) के शान्तिनाथ जिनालय के ध्वजादंड एवं गुरुमूर्त्ति आदि की प्रतिष्ठा करवाई। वहां से विचरते हुये पालीताना पधारे अशाता वेदनीय के उदय से आप अस्व-स्थ रहने लगे, फिर भी ज्ञान और संयम की आराधना में निरन्तर लगे रहते थे।

कदम्बगिरि के संघ में सम्मिलित होकर सौभागचन्दजी मेहता को आपने संघपति की माला पहनाई और तदनन्तर उपाध्यायजी की आज्ञानुसार अस्वस्थ होते हुए भी भुज-कच्छ के सम्भवनाथ जिनालय की अंजनशलाका और प्रतिष्ठा उपाध्यायजी के सान्निध्य में करवाई फिर पालो-ताना पधारे और सिद्धगिरि पर स्थित दादाजी के चरण-पादुकाओं की प्रतिष्ठा और श्रीजिनदत्तसूरि सेवा संघ के अधिवेशन में सम्मिलित हुए। वहां श्रीगुलाबमुनिजी काफी दिनों से अस्वस्थ थे। आपने उनकी सेवामें कोई कसर नहीं रखी, पर उनकी आयुष्य की समाप्ति का अवसर आ चुका था, अतः सं० २०१७ वैसाख सुदि १० महावीर केवलज्ञान तिथि के दिन गुलाबमुनिजी स्वर्गस्थ हो गये।

आपका स्वास्थ्य पहले से ही नरम चल रहा था और काफी अशक्ति आ गई थी। तलहट्टो तक जाने में भी आप थकजाते थे। पर सं० २०१८ के मिगसर से स्वास्थ्य और भी गिरने लगा और वैद्यों के दवा से भी कोई फायदा नहीं हुआ तो आप को डोली में विहार करके हवापानी बदलने के लिए अन्यत्र चलने को कहा गया। पर आपने यही कहा कि मैं डोली में बैठकर कभी विहार नहीं करूँगा फाल्गुन महीने से ज्वर भी काफी रहने लगा और वैद्यों ने आपको श्रम करने का मना कर दिया। पर आप ज्वर में भी अपने अधूरे कामों को पूरा करने-लिखने आदि में लगे रहते थे। चिकित्सक को आपने यही उत्तर दिया कि यह तो मेरी रुचि का विषय है, लिखना बन्द कर देने पर तो और भी बीमार पड़ जाऊँगा। वैद्यों की दवा में लाभ होता न देखकर आपसे डाक्टरी इलाज करने का अनुरोध किया गया, तो आपने कहा कि मैं कोई डाक्ट्री दवा-इंजे-क्शन-मिक्सचर आदि नहीं लूँगा। तुम लोग आग्रह करते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होतो फिर सूखी दवा ले सकता हूं। दो तीन महीने दवा ली भी, पर कोई फायदा नहीं हुआ। तब श्रीप्रतापमलजी सेठिया और अरचतलाल शिवलाल ने बम्बई से एक कुशल वैद्य को भेजा। पर अशाता वेदनीय कर्मोदय से कोई भी दवा लागू नहीं पड़ी। आप अपने शिष्यों को हित की शिक्षा देते रहते थे। शिष्यों ने कहा कि कल्पसूत्र के गुजराती अनुवाद का मुद्रण अधूरा पड़ा है। उसे कौन पूरा करेगा? प्रत्युत्तर में आपने कहा—इसकी चिन्ता मत करो, जहां तक वह पूरा नहीं होगा, मेरी मृत्यु नहीं होगी। आपका दृढ़ निश्चय और भविष्यवाणी सफल हुई और आपके स्वर्ग-वास के दो-तीन दिन पहले ही कल्पसूत्र छप कर आ गया और उसे दिखाने पर आपने उसे मस्तक से लगाया, ऐसी आपकी अपूर्व ज्ञान-भक्ति थी।

श्रावण सुदी पंचमी से आपकी तबियत और भी बिगड़ने लगी पर आप पूर्ण शांति के साथ उत्तराध्ययन, पद्मावती सज्झाय, प्रभंजना व पंचभावना की सज्झाय आदि सुनते रहते थे। सप्तमी के दिन आपका शरीर ठंडा पड़ने लगा। उस समय भी आपने कहा—मुझे जल्दी प्रतिक्रमण कराओ। प्रतिक्रमण के बाद नवकार मंत्र की अखण्ड धुन चालू हो गयी। सबसे क्षमापना कर ली। दूसरे दिन साढ़े तीन बजे आपने कहा मुझे बैठाओ! पर एक मिनट से अधिक न बैठ सके और नवकार मन्त्र का स्मरण करते हुए श्रावण शुक्ल अष्टमी पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक के दिन स्वर्गवासी हो गये।

आप एक विरल विभूति थे। आपके चारित्र की की प्रशंसा स्वगच्छ और परगच्छ के सभी लोग मुक्त कण्ठ से करते थे। ज्ञानोपासना भी आपकी निरन्तर चलती रहती थी। एक मिनट का समय भी व्यर्थ खोना आपको बहुत ही अखरता था। साध्वोचित क्रियाकलाप करने के अतिरिक्त जो भी समय बचता था; आप ज्ञान सेवा में लगाते थे। इसीलिए आपने कई ज्ञानभन्डारों की सुव्यवस्था की, सूची बनाई। आप जो काम स्वयं कर सकते थे, दूसरों से न हो करवाते थे। श्रावक समाज का थोड़ा-सा भी पैसा बरबाद न हो और साध्वाचार में तनिक भी दूषण न लगे इसका आप पूर्ण ध्यान रखते थे। अनेक ग्रन्थों का सम्पादन एवं संशोधन बड़े परिश्रम पूर्वक आपने किया था। खरतरगच्छ गुर्वावली के हिंदी अनुवाद का संशोधन-कार्य जब आपको सौंपा गया तब ग्रन्थ के शब्द व भाव को ठीक से समझ कर पंक्ति पंक्ति का संशोधन किया। आपके सम्पादित एवं संशोधित ग्रन्थों में प्रश्नोत्तरमञ्जरी, पिंडविशुद्धि, नवतत्व संवेदन, चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति, प्रतिक्रमण हेतुगर्भ, कल्पसूत्र संस्कृत टीका, आत्मप्रबोध, पुष्पमाला लघुवृत्ति आदि प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थों का तथा जिनकुशलसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि आदि ग्रन्थों के गुजराती अनुवाद के संशोधन में आपने काफी श्रम किया। सूत्रकृतांग सूत्र भाग १-२ द्वादशपर्वकथा के अतिरिक्त जयसोमोपाध्याय के प्रश्नोत्तर चत्वारिंशत् शतक का सम्पादन एवं गुजराती अनुवाद बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ के सम्पादन के द्वारा आपने खरतरगच्छ की महान् सेवा की है। आपने और भी कई छोटे मोटे ग्रन्थों का सम्पादन एवं संशोधन नाम और यश की कामना रहित होकर किया। ऐसे महान मुनिवर्य का अभाव बहुत ही खटकता है। श्री जयानंदमुनिजी आदि आपके शिष्यों से भी आशा है, अपने गुरुदेव का अनुकरण कर गच्छ एवं शासन को सेवा करने का प्रयत्न करेंगे।

स्वर्गीय गणिवर्य को श्रीमद्देवचन्द्रजी की रचनाओं के स्वाध्याय एवं प्रचार में विशेष रुचि थी। कई वर्ष पूर्व श्रीमद् देवचन्द्रजी को अप्रसिद्ध रचनाओं का संकलन करके एक पुस्तक प्रकाशित करवाई थी। जिस रहस्य को श्रीमद् देवचन्दजी ने अपूर्व शैली द्वारा प्रकाशितकिया है, पूज्य बुद्धिमुनिजी का जीवन बहुत कुछ उन्हीं आदर्शों से ओतप्रोत था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org